thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 27 रोहतक, 14 दिसम्बर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

दयानन्दमठ रोहतक का मासिक सत्संग सफलतापूर्वक सम्पन्न

रोहतक। दिनांक 07.12.2014 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा दयानन्दमठ रोहतक में मासिक वैदिक सत्संग का सफल आयोजन हुआ। सत्संग का पूरा कार्यक्रम मास्टर रामपाल आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में हुआ। सत्संग की शुरुआत श्री जितेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ द्वारा की। उसके पश्चात् बहन सुमित्रा आर्या, दया आर्या, कुसुमलता, भाई सुशील आर्य, अजीत आर्य, हनुमन्त आर्य आदि ने ईश्वर महिमा, ऋषि दयानन्द के उपकार सम्बन्धी भजन रखे। इस सत्संग के मुख्य वक्ता डॉ० सुरेन्द्र कुमार (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक) ने अपने मुख्य उद्बोधन में बताया कि समय-समय पर इस देश में तत्त्वज्ञान को लेकर विभिन्न

प्रवृत्तियां चलीं। किसी ने दावा किया कि संसार सत्य है, ब्रह्म मिथ्या है, दूसरे ने दावा किया कि ब्रह्म सत्य है जगत् मिथ्या है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने महाभारत काल से पहले वेदज्ञ ऋषियों के अनुकूल त्रैतवाद का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन अनादि सत्ताएं हैं। इनको यथावत् समझकर ही मनुष्य पुण्य व श्रेष्ठ मार्ग पर चल सकता है। इस अवसर पर समाज के लिए उपयोगी भूमिका निभाने वाले अधिवक्ताओं तथा इलैक्ट्रिक व प्रिंट मीडिया से जुड़े विभिन्न पत्रकारों को मास्टर रामपाल आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नेतृत्व में सभा की ओर से सम्मानित किया गया।

पूज्य आचार्य बलदेव जी ने सभी आगन्तुकों को आशीर्वाद दिया तथा कहा कि 8 फरवरी 2015 को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सभी आर्यजन अवश्य आयें। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। उनके विचार सुनकर पुण्य लाभ अवश्य प्राप्त करें।

इस अवसर पर पं० जगदेव सिंह जी सेवानिवृत्त प्राचार्य, आचार्य योगेन्द्र प्रधान हरियाणा गोशाला संघ, आचार्य सर्वमित्र आर्य, आचार्य अभय आर्य, श्री सत्यमुनि जी, श्री वेदप्रकाश आर्य, ब्र० सत्यकाम तथा भारी संख्या में शहरी व ग्रामीण जन उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

किसी की सार्थकता

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

साधारण से साधारण समझदार भी जो कार्य, बात करता है, वह लाभ की दृष्टि से ही करता है, लाभ भौतिक-अभौतिक दोनों प्रकार का हो सकता है। लाभ देने वाले को सार्थक, उपयोगी कहा जाता है। इससे विपरीत को निरर्थक, अनुपयोगी बोला जाता है। जिस बात से लाभ के स्थान पर हानि, नुकसान, बिगाड़ होता है, उसको हानिकारक माना जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में अनेक अवसरों पर अनेक प्रकार की पूजा करता है। पूजा का अर्थ होता है, किसी को आदर-सत्कार देना। किसी की उपयोगिता समझते हुए हम उसकी पूजा करते हैं। हम अनुभव करते हैं कि इससे हमारा यह उपकार, भला हो रहा है, इससे यह-यह लाभ हो रहा है। तब हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करने, आभार दर्शाने के लिए उसकी पूजा करते हैं। इससे दोनों ओर सन्तुष्टि होती है, जिससे सार्थकता सामने आती है।

यह पूजा जड़-चेतन दोनों की अपने-अपने ढंग से होती है। क्योंकि दोनों प्रकार की वस्तुएं हमारे उपयोग में आती हैं। इन दोनों से हम को लाभ मिलता है। किसी की पूजा किस प्रकार की जाए? इसका सीधा-सा उत्तर है कि वह पूजित अपना आदर समझे। किसी की समझ सन्तुष्टि से सामने आती है।

चेतन अपनी भावना, सन्तुष्टि स्पष्ट प्रकट कर देता है। दूसरों को भी अनुभव करा देता है। हाँ, जड़ ऐसा नहीं करा सकता है। जड़ की संभाल, उसका सदुपयोग ही उसकी पूजा है। इससे वह वस्तु वर्तने पर सुन्दर लगती है, सुविधा दायक अनुभव होती है और वह अधिक समय तक चलती है। इसी को सन्तुष्टि कहा जा सकता है। इस प्रकार की सन्तुष्टि हम अपने-अपने वाहन में स्पष्ट रूप से समझते हैं।

आजकल पूजा शब्द धूप-दीप-फूल आदि पूजा सामग्री से आरती करने, भेंट चढ़ाने, मत्था टेकने आदि में रूढ़ कर दिया गया है। पूजा के नाम पर सबसे एक-सा व्यवहार किया जाता है।

अत: अभौतिक को भी भौतिक रूप देकर वैसा ही वर्ताव होने लगा है। जैसे कि गायत्री एक मन्त्र है, छन्द है, जिसका मनन, समझ, विचार से सम्बन्ध है। पर उसकी भी एक कल्पित मूर्ति बनाकर धूप-दीप आदि से पूजा की जा रही है। तालमेल, सार्थकता बने या नहीं, एक रिवाज चला दिया जाता है। फिर हर तरह की पूजा सामग्री को जल में प्रवाहित करने की परम्परा चला दी गई। विविध प्रदेशों में समय-समय पर गणेश, दुर्गा, सरस्वती आदि की मूर्ति बना पहले पूजा चलती है, फिर एक दिन धूमधाम से प्रवाहित किया जाता है। इससे आगे से आगे प्रदूषण की अनेक समस्याएं सामने आती हैं। जैसे कि—

8.11.2014 को श्री मोदी जी ने काशी में गंगा पूजा की। पूजा करते हुए उन्होंने अपने पूजा कराने वाले को कहा कि थोड़ी से थोड़ी पूजा सामग्री वर्ती जाए, क्योंकि बाद में प्रवाहित करने पर गंगा में प्रदूषण बढ़ेगा।

ऐसे ही 2014 की कार्तिक पूर्णिमा के स्नान पर कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर में स्नान के पश्चात् बहुत अधिक प्रवाहित पूजा सामग्री गन्द बनकर सामने आई। फिर उसको हटाने की विशेष व्यवस्था करनी पड़ी।

यह कितने ही आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो हम प्रदूषण निवारण के लिए अरबों रुपये व्यय करके वर्षों योजनायें चलाते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रदूषण करने वाली पूजा सामग्री जल में प्रवाहित करते हैं। परस्पर विरोधी यह बात, कार्य क्यों? अत: समझदारी की मांग है कि सार्थक ही कार्य, बात करें।

संपर्क-182, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब)

महापुरुषों के जीवन से मिलती है आदर्श शिक्षा

❑ संदीप आर्य, पी.टी.आई. आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

किसी भी देश का गौरव देश की महान् संस्कृति से होता है। संस्कृति का निर्माण होता है देश में पैदा होने वाले महापुरुषों के आदर्श जीवन तथा उनके द्वारा किये गये श्रेष्ठ कार्यों से। महापुरुषों के जीवन से लोग सदियों तक प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं। हमारे देश में अनेक महापुरुष हुए हैं जिनके कारण हमारा राष्ट्र विश्व में पूजनीय तथा विश्वगुरु रहा है। उन महापुरुषों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, योगेश्वर श्रीकृष्ण, वीर हनुमान, ब्रह्मचारी भीष्म, धनुर्धारी अर्जुन, आचार्य चाणक्य, गुरु गोविन्दसिंह, बंदा बहादुर, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, महारानी लक्ष्मीबाई, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस, स्वामी ओमानन्द सरस्वती आदि अनेक ऐसे महापुरुष हुये हैं, जिन्होंने समय-समय पर आगे आकर देशवासियों के लिये मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। अपने आदर्श जीवन और उज्ज्वल जीवन चरित्र के कारण ये सभी महापुरुष अपने कुल तथा राष्ट्र का नाम सदैव के लिये रोशन कर गये। इन सभी ने अपने जीवन में धर्म व देशप्रेम के मार्ग पर चलकर लोगों के सामने एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसके कारण आज भी ये लोगों के हृदय में निवास करते हैं।

इसी प्रकार हम देखते हैं कि अपने कुविचारों के कारण अनेक ऐसे दुष्ट भी इस देश में हुये हैं जो अपने कुल तथा राष्ट्र को विनाश की ओर ले गये। जैसे—रावण, दुर्योधन, कंस आदि इन्होंने पापों और गलत कार्यों तथा दुष्टों के संग के कारण अपने परिवार तथा अनेक निर्दोष लोगों को काल की भेंट चढ़वा दिया। इनके कुकृत्यों के कारण लोग आज लाखों-हजारों वर्षों के बाद भी इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए हमें अपने महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेते हुये जीवन में आगे बढ़ना चाहिये। अच्छे संस्कारों और विचारों के लिए हमें समय-समय पर सत्संग, विद्वानों का संग, महापुरुषों के जीवन चरित्र एवं अनेक अच्छी पुस्तकें हैं जिनका हम स्वाध्याय कर सकते हैं, क्योंकि हम जिस वातावरण में रहेंगे उसका अच्छा या बुरा प्रभाव जरूर होगा। जिस प्रकार एक या दो वर्ष का बच्चा बड़ों को देखते हुये हँसना, बोलना आदि सब सीख जाता है। इसी प्रकार हम एक या दो वर्ष के बच्चे को अगर जंगल में छोड़ देते हैं जहाँ उससे कोई बात न करे तो उसका आचरण भी पशु-पक्षियों की तरह बनने लगेगा। संगति का हमारे जीवन में विशेष प्रभाव होता है। कहा भी गया है—'जैसी संगत वैसी रंगत'। जिस प्रकार अग्नि के पास बैठकर हम गर्मी की अनुभूति करते हैं उसी प्रकार अच्छी या बुरी संगति का प्रभाव भी हमारे ऊपर जरूर होगा चाहे कम हो या ज्यादा। इसलिए आप सभी से निवेदन है कि जब भी आप सत्संग तथा अन्य धार्मिक कार्यों में भाग लें तो अपने बच्चों को अवश्य साथ लेकर जायें।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

गीता-सार

- क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है न मरती है।
- तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आये, जो लिया यहीं लिया, जो दिया यहीं पर दिया, जो लिया इस (भगवान्) से लिया, जो दिया इसी को दिया, खाली हाथ आये, खाली हाथ चले, जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता ही तुम्हारे दु:खों का कारण है।
- परिवर्तन ही संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण तुम दरिद्र बन जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो, यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जाएगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो? तुम अपने आपको भगवान् को अर्पित करो। यह सबसे उत्तम सहारा है जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है।
- जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान को अर्पण करता चल। इसी में तू सदा मुक्त अनुभव करेगा। भेंटकर्त्ता : भलेराम आर्य (सांघी वाले),

एफ-8, इन्द्रप्रस्थ कालोनी, सोनीपत रोड, रोहतक

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

आत्मिक शक्ति के चार लाभ

-: वेद-मन्त्र :-

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे।
स वृषा वृषभो भुवत्॥ 5॥ 119॥ (सामवेद)

शब्दार्थः- इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने की बजाय हम [तम्]=उस [इन्द्रम्] =आत्मा को ही [वाजयामसि] = शक्तिशाली बनाते हैं। [महे] =महत्त्व प्राप्ति के लिये। इन्द्रियों के शक्ति के बढ़ा लेने से इस लोक में किसी ने महिमा प्राप्त नहीं की, परमात्मा के दृष्टिकोण में महत्त्व की प्राप्ति का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इतिहास के अन्दर जिन्हें हम महापुरुषों के रूप में स्मरण करते हैं वे सब आत्मशक्ति को बढ़ाकर ही महापुरुष बन पाये। वस्तुतः बाह्य साम्राज्य के स्थान में अन्तःसाम्राज्य को बढ़ाना ही श्रेयस्कर है। हम इस अन्तःसाम्राज्य में आत्मिक शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील होते हैं 'वृत्राय हन्तवे' ज्ञान को आवृत करने वाले इस काम रूप वृत्र के विनाश के लिये। इन्द्रियों की शक्ति को बढ़ाने से वासनाओं को कुछ बढ़ावा मिलता है—जबकि आत्मा की तेजस्विता इन वासनाओं को दग्ध कर देती है।

आत्मा की शक्ति को बढ़ाकर [स] = वह श्रुतकक्ष [वृषा] = शक्तिशाली [भुवत्] = बनता है। इन्द्रियों की शक्ति को बढ़ाकर तो कुछ भोग वृद्धि से शक्ति जीर्ण ही होती है। स्वयं शक्तिशाली होकर [वृषभः] = औरों पर सुखों की वर्षा करने वाला बनता है। इन्द्रियों की शक्ति को बढ़ाने वाला व्यक्ति निजी भोगों को बढ़ाने के मार्ग पर चलता है, औरों को हानि पहुंचाकर भी वह अपने को सुखी बनाने के लिए प्रयत्नशील होता है।

एवं इन्द्रियों की शक्ति को बढ़ाने वाला परिणामतः खूब खाने वाला लोक में महत्त्व को प्राप्त नहीं करता। वह कामादि वासनाओं को समाप्त नहीं कर पाता और इसलिए वास्तविक शक्ति का अर्जन नहीं कर पाता—औरों को तो उसने सुखी करना ही क्या?

भावार्थ—हम आत्मिक तेज को प्राप्त करें। वह हमें महत्त्व प्राप्त करायेगा, कामादि के विध्वंस के योग्य बनायेगा, शक्तिसम्पन्न होकर हम लोकहित करने वाले बनेंगे।

—आचार्य बलदेव

वेदप्रचार मण्डल हिसार के बढ़ते कदम

वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा ग्राम शाहपुर में श्री सतबीर के घर 26 अक्तूबर को पारिवारिक यज्ञ किया गया। प्रधान जी ने गायत्री मन्त्र का सरल शब्दों में उपदेश दिया। 14 नवम्बर को सायंकाल सन्ध्या-हवन के बाद एक सभा हुई जिसमें गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के विद्यार्थियों ने ब्राह्म महाविद्यालय में भाग लिया। कुम्भाखेड़ा से पधारे श्री रामेश्वर शास्त्री ने विद्यार्थी के कर्त्तव्य पर सारगर्भित विचार रखे। मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने सामाजिक बुराई शराबखोरी, धूम्रपान, जुआ, ताश पर बर्बादी का दर्दनाक चित्र खींचा। विद्यालय के अध्यापक श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री ने देश की आजादी में आर्यसमाज का योगदान पर विचार रखे। 14 से 16 नवम्बर 2014 तक आर्यसमाज नागोरी गेट की शोभायात्रा व उत्सव में मण्डल के अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। ग्राम बाण्डा ब्राह्मणान में शार्दूल शर्मा की श्रद्धाञ्जलि में 15 नवम्बर सायंकाल पं० कुलदीप आर्य करनाल के शिक्षाप्रद भजन हुये। रामकुमार आर्य प्रधान व वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही नेअपने विचार रखे। सुरेन्द्र आर्य मण्डोली कलां ने मंच संचालन किया। 16 नवम्बर को प्रातः कैलाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में एक टिन घी से शान्तियज्ञ हुआ। ब्राह्म महाविद्यालय के चार छात्रों ने मन्त्र पाठ किया। उनके बेटों ने श्री सुरेश शर्मा, सुरेन्द्र शर्मा, विजय, सुमित तथा सुरेन्द्र आर्य का विशेष सहयोग रहा। 16 नवम्बर को सायं दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री का सारगर्भित उपदेश हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी व अत्तरसिंह स्नेही उपस्थित थे। 19 नवम्बर को वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने नलवा में श्री भलेराम आर्य के घर पर पारिवारिक यज्ञ किया।

-मा. दिलबाग सिंह आर्य,
उपमंत्री वेदप्रचार मण्डल हिसार

कार्यक्रम सूचना

आर्यसमाज मॉडल टाउन रोहतक में 19 दिसम्बर से 21 दिसम्बर 2014 तक आर्य पारिवारिक सत्संग सभा रोहतक द्वारा यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें मुख्य वक्ता आचार्य सोमदेव जी परोपकारिणी सभा अजमेर होंगे।

रामपालदास और विज्ञान

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

यहाँ आरम्भ में कुछ पंक्तियां प्रकरणान्तर लिखनी पड़ रही हैं, क्योंकि जब यह लेख लिखना आरम्भ किया तो हरयाणा से प्रकाशित दैनिक जागरण में मुखपृष्ठ पर एक खबर पढ़ी जिसके शीर्षक का कथन आपके साथ बांटना उचित समझता हूँ। शीर्षक के अनुसार पुलिस ने पूछताछ में जब रामपालदास व उसके बेटे को आमने-सामने बैठाया गया तो रामपालदास ने कहा, **''बेटा, करा दिया नाश''**, इधर से रामपाल दास के बेटे ने कहा, **''बाबू तनै किया सत्यानाश।''** इसी प्रकरण से देखिये कि ये कैसे बुद्धिहीन थे। महाशोक की बात कि ये लोग अनेक वर्षों तक वेद, सत्यार्थप्रकाश व महर्षि दयानन्द पर मनमाने आक्षेप लगाते रहे। विद्वान् आर्य अति दुःखी रहे, प्रशासन, सरकार से गुहार लगाते रहे, कोई सुनवाई नहीं हुई। जिन बुद्धि, तर्क, सृष्टि नियम विरुद्ध तथ्यों पर आधारित तथा अंधविश्वास व आतंक फैलाने वाली पुस्तकों को यह जबरदस्ती गुरुकुलों व गऊशालाओं, आर्यसमाजियों के घरों में भी फिकवाता रहा, अब उन्हीं पुस्तकों के आधार पर पुलिस इस पर मुकदमे दर्ज कर रही है। लेकिन उस समय की हुड्डा सरकार ने इस सन्दर्भ में अनेक शिकायतों के बाद भी कुछ नहीं किया था। अब टी.वी. चैनलों पर हुड्डा साहब बयान दे रहे हैं कि हमने तो दो दिन में ही इसे गिरफ्तार कर लिया था। कोई हुड्डा साहब से पूछे कि बेशर्मी की कोई हद होती है या नहीं?

आचार्य अभय आर्य

अब मूल विषय पर आते हैं। 'महाभारत' के बाद अब तक ऋषि दयानन्द से बड़ा सत्य का गवेषक कोई नहीं हुआ। ऋषि घोषणा करते हैं, **''जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।''** यह विज्ञान की यथार्थ परिभाषा है। विद्या के प्रति ऋषि का अनुराग ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उनके इन शब्दों से परिलक्षित होता है, **''जितने ब्रह्माण्ड में उत्तम पदार्थ हैं, उनकी प्राप्ति से जितना सुख होता है सो सुख विद्याप्राप्ति से होने वाले सुख से हजारहवें अंश के भी समतुल्य नहीं हो सकता।''** महाशोक की बात कि विद्या, विज्ञान का महाशत्रु रामपालदास ऐसे महर्षि के ग्रन्थों को अवैज्ञानिक बताता रहा। रामपालदास अन्य ग्रहों पर जीवन की स्थिति पर ऋषि के दावे की खिल्लियां उड़ाता रहा। यह भूल गया कि आज देश-विदेश के बड़े-बड़े वैज्ञानिक अन्य ग्रहों पर जीवन की तलाश में अरबों रुपया खर्च रहे हैं। यह अलग तथ्य है कि ईश्वरीय ज्ञान व ईश्वरीय न्यायव्यवस्था का मनुष्य अपनी बुद्धि की सीमा तक ही पार पा सकता है। लेकिन रामपाल दास जिस **'सतलोक'** का दावा कर रहा था क्या कभी कोई वैज्ञानिक उसे भी खोजने का प्रयास करेगा? **'सत्यार्थ प्रकाश'** में ऋषि जी भूत-प्रेतरूपी अन्धविश्वास का वैद्यक व शब्द शास्त्र के आधार पर वैज्ञानिक खण्डन करते हैं। रामपालदास तांत्रिक क्रियाओं में संलिप्त मिलता है तथा इसके आश्रम में भूत-प्रेत से छुटकारा दिलवाने का पत्थर लगा रखा था। इसकी पुस्तकों व क्रियाकलाप के आधार पर हम तो वर्षों पहले इसे 'तान्त्रिक' व 'सेवड़ा' नाम दे चुके थे। वेदों पर मनमाने आक्षेप लगाने वाले को ब्रह्महत्या के समान पाप लगता है। इसी प्रकार ऋषिद्वेषी व ऋषिद्रोही को भी शस्त्र से बींधने का आदेश है। रामपालदास ने ये दोनों पाप किए व दुर्गति को प्राप्त हुआ दुर्गति भी बड़ी भयंकर।

शेष इस संदर्भ में आर्य-समाजियों के कर्त्तव्य व बलिदानियों के बारे में लिखेंगे।

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@gmail.com

thearyasamaj.org

राष्ट्र से बड़ा कुछ भी नहीं

संस्कृति और इतिहास न केवल राष्ट्र की धरोहर होते हैं, अपितु राष्ट्रीय अस्मिता भी इन्हीं दो तत्त्वों में संरक्षित रहती है। पिछली केन्द्र सरकारों ने राम के ऐतिहासिक अस्तित्व को नकार कर न केवल राष्ट्रीय अस्मिता पर चोट की है अपितु आम हिन्दू की भावना को भी आहत किया है। राम और कृष्ण भारत नामक आर्य राष्ट्र के ऐतिहासिक पुरुष तो हैं ही, साथ ही आदर्श मर्यादाओं और अनुशासन के संस्थापक भी हैं। इनके अस्तित्व को नकारने के साथ हम इनके द्वारा स्थापित मानवीय मानकों को भी मानने से मना कर देते हैं। इस संदर्भ में किसी भी सरकार और देश की जनता को सचेत हो जाना चाहिए कि अपने गौरवमय पूर्वजों को उचित सम्मान एवं स्थान दिये बिना उनका कोई भविष्य नहीं है न सरकार का, न जनता का।

दूसरी ओर जनता से इतनी समझ की अपेक्षा रखी जानी चाहिए कि राजमार्गों के बीच में मंदिर-मजार बनाकर वहां भीड़ इकट्ठी करना धार्मिक कृत्य नहीं है, अपितु देशद्रोह है। स्थानीय सरकार तथा अधिकारियों को अपनी संकल्प शक्ति का परिचय देना चाहिए तथा जो भी मंदिर-मस्जिद, मठ-मजार सड़कों पर गति अवरोध एवं जाम का कारण बनती है, उन्हें वहां से हटाकर अन्य सर्व-सुविधाओं में युक्त स्थान पर स्थापित करना चाहिए। इसी क्रम में, धर्म का अस्तित्व राष्ट्र-विकास में सहयोगी होना चाहिए न कि अवरोधी। जो भी धार्मिक भवन अथवा जुलूस आदि कृत्य राष्ट्र-उन्नति में बाधक बनें, उन्हें उन्नति मार्ग से हटा देना चाहिए।

आज पूरी पृथ्वी धार्मिक-पागलपन की चपेट में है। कुछ पागलों ने आस्तिकता और श्रद्धा के नाम पर अंधविश्वासों और अंधश्रद्धा का चोला पहन रखा है और कुछ ने नास्तिकता के नाम पर कम्युनिस्ट का चोला।

इन भोले लोगों को कब समझ आएगी कि मजहब अथवा सम्प्रदाय का धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। धर्म तो वही है जो आर्य ऋषियों-मुनियों, राम-कृष्ण आदि महापुरुषों से लेकर महर्षि दयानंद तक के लोगों ने बताया। इन सबके अनुसार धर्म का मतलब है- प्रेम, परस्पर-सहकारिता, पर पीड़ा-संवेदन, सत्यपालन, अहिंसा आदि-यदि ये तत्व हैं तो वह व्यक्ति धार्मिक है और जिसमें प्रेम, सहयोग, संवेदन आदि तत्त्व नहीं हैं, तो वह अधार्मिक है। इतनी-सी बात पृथ्वी वासियों को जिस दिन समझ में आ जाएगी उसी दिन 95 प्रतिशत समस्याओं का स्वयं ही उपचार हो जाएगा। किन्तु पंडित, पादरी और मौलवी भोली जनता को धर्म का सत्य-रूप कभी नहीं बतायेंगे, हो सकता है वे स्वयं भी धर्म के सत्य-रूप से अपरिचित हों। जिन्हें हम धार्मिक कर्मकाण्ड कहतें है, उनकी धर्म में उतनी ही भूमिका होती है जितनी सुवर्ण आभूषण बनाने में तांबे की। सोने में तांबा मिलाकर आभूषण बने तो उचित है और यदि सारा तांबा ही हो और सोने की थोड़ी-सी मिलावट करके पूरे आभूषण को स्वर्ण आभूषण नाम दे दिया जाए, तो यह मिथ्याचार हो जाता है। कर्मकाण्ड धर्म नहीं है अपितु धर्म का स्वल्पांश मात्र है।

सत्य धार्मिक लोगों से ही राष्ट्र निर्मित एवं उन्नत होता है। जहां बिना धर्म के केवल कर्मकाण्डी लोग इकट्ठे हो जाते हैं, वह राष्ट्र झगड़ों, अन्तर्कलह का अखाड़ा मात्र बनकर रह जाता है। अस्तु भारतवासियों को कुछ चीजें सुनिश्चित कर लेनी चाहिए-

(1) कोई भी महजब अथवा सम्प्रदाय राष्ट्र से बड़ा नहीं है। यदि राष्ट्र और मजहब में कहीं संघर्ष-विरोध होता है, तो राष्ट्र को प्राथमिकता दी जाए।

(2) वेद, उपनिषद, गीता, रामायण आदि ग्रन्थ राम-कृष्ण आदि महापुरुष राष्ट्र की धरोहर हैं। किसी भी राजनैतिक पार्टी अथवा संगठन को कोई अधिकार नहीं है कि इन पर आपत्तिजनक टिप्पणी करे।

(3) समान आचार नागरिक संहिता, इस विविधताओं से भरे देश की परम-आवश्यकता है। भिन्न-भिन्न भाषाओं और विविध रीति-रिवाजों के बीच राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का शिक्षण एवं राजकीय कार्यालयों में प्रयोग अनिवार्य रूप से हो। प्रत्येक नागरिक की बाध्यता हो कि वह भारतीय संविधान का सम्मान तथा राष्ट्रीय कर्त्तव्यों का अनुपालन करे। चाहे वह किसी भी मत-मजहब को मानने वाला क्यों न हो।

-डॉ. देवव्रत आचार्य,
प्राचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत द्वारा आयोजित
श्री नरेशदत्त जी आर्य भजनोपदेशक बिजनौर वाले द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम

दिनांक	समय	प्रातः	दोपहर	रात्रि
02-12-14		सरस्वती सी०सै० स्कूल कबीरपुर प्रातः 8 बजे से यज्ञ प्रारम्भ कार्यक्रम का शुभारम्भ		
			1 बजे अशोक गोयल जी के घर	जाहरी में
03-12-2014	09-00 बजे	शहजादपुर सी०सै० स्कूल	सांदल कलां स्कूल,	चटिया ओलिया
04-12-2014	09-00 बजे	पाची सरकारी स्कूल	पुरखास सरकारी स्कूल	गन्नौर
05-12-2014	09-00 बजे	गन्नौर स्कूल	गन्नौर स्कूल	गन्नौर के पास
06-12-2014	09-00 बजे	कैलाना सरकारी स्कूल	खुबडू स्कूल	आहुलाना
07-12-2014	09-00 बजे	बली	बली	पुगथला
08-12-2014	09-00 बजे	पुगथला सरकारी स्कूल	कासण्डी स्कूल	सरगथल
09-12-2014	09-00 बजे	सरगथल सरकारी स्कूल	सरगथल स्कूल	बीधल
10-12-2014	09-00 बजे	बीधल कन्या स्कूल	गोहाना स्कूल	गोहाना
11-12-2014	09-00 बजे	बरोदा स्कूल	बरोदा स्कूल	बरोदा
12-12-2014	09-00 बजे	नूरनखेड़ा स्कूल	नूरनखेड़ा स्कूल	नूरनखेड़ा
13-12-2014	09-00 बजे	गंगाना स्कूल	गंगाना स्कूल	गंगाना
14-12-2014	09-00 बजे	आहुलाना स्कूल	आहुलाना स्कूल	आहुलाना
15-12-2014	09-00 बजे	----------	----------	फरमाणा
16-12-2014	10-00 बजे	सिसाना ज्ञानदीप स्कूल	प्रताप मैमोरियल स्कूल	रोहणा
17-12-2014	10-00 बजे	रोहणा स्कूल	आर्य उच्च विद्यालय	खरखौदा
18-12-2014	10-00 बजे	हलालपुर	नाहरी स्कूल	नाहरा
19-12-2014	10-00 बजे	मण्डोरा	कवाली स्कूल	रोहट
20-12-2014	10-00 बजे	भदाना	ककरोई स्कूल	तिहाड़
21-12-2014	10-00 बजे	तिहाड़	तिहाड़ खुर्द गाँव	भठगाँव
22-12-2014	10-00 बजे	भठगाँव	रतनगढ़ स्कूल	करेवड़ी
23-12-2014	10-00 बजे	स्वामी श्रद्धानन्द सी.सै. बड़वासनी	हल्हेड़ी सरकारी स्कूल	माहरा
24-12-2014	9-00 बजे	हैप्पी चाइल्ड स्कूल, सोनीपत	सोनीपत स्कूल	माहरा गाँव
25-12-2014	शोभायात्रा में सोनीपत।			

—रमेश आर्य, अध्यक्ष जिला वेदप्रचार मण्डल, सोनीपत

thearyasamaj.org

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत में आर्यवीर दल की शाखा का शुभारम्भ

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को गति देने के लिए, महर्षि दयानन्द जी की भावनाओं को प्रसारित करने के लिए सार्वदेशिक आर्यवीर दल की शाखा का शुभारम्भ विद्यालय के युवा व कर्मशील निदेशक आचार्य श्री अभय आर्य जी के कुशल निर्देशन में हुआ। इस शाखा का उद्देश्य बच्चों में अच्छे-अच्छे संस्कार तथा वैदिक विचारों का प्रदान करना है। इस शाखा में मुख्य रूप से लाठी, स्तूप, जूडो, कराटे, आसन, प्राणायाम तथा योग आदि प्रशिक्षण दिया जाता है। लगभग 100 बच्चे प्रति रविवार इसमें प्रशिक्षण लेते हैं। व्यायाम का पूर्ण प्रशिक्षण आर्यवीर दल पानीपत के मुख्य शिक्षक श्री महावीर जी शर्मा देते हैं। समय-समय पर आर्यसमाज के अनेक विद्वान्, वैदिक प्रवक्ता बच्चों को वैदिक संस्कारों के विषय में उद्बोधन देते रहते हैं। 9 नवम्बर रविवार 2014 रविवार को विद्यालय के निदेशक आचार्य श्री अभय आर्य जी ने बच्चों को उद्बोधन देते हुए कहा कि ब्रह्मचर्य के पालन से ही शक्ति व जीवन प्राप्त होता है। अत: संयमपूर्वक अपने शरीर का निर्माण करना चाहिए। आर्यवीर दल के शिविरों तथा शाखाओं में बच्चों का शारीरिक व बौद्धिक निर्माण होता है। 16 नवम्बर रविवार को विद्यालय के संस्कृत एवं धर्माचार्य आचार्य राजकुमार शर्मा ने बच्चों को महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के कार्यों पर चर्चा करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने अन्धविश्वासों पर तर्कशक्ति के रूप में कुठाराघात किया तो आर्यसमाज ने महर्षि दयानन्द के विचारों के अनुकूल पाखण्ड का नाश किया। 23 नवम्बर रविवार को विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रेखा शर्मा ने बच्चों को आर्यवीर दल का उद्देश्य बताते हुए कहा कि आर्यवीर दल का लक्ष्य है भारत के बच्चों को चरित्रवान् तथा सदाचारी बनाना। हिन्दी अध्यापक ब्र० जितेन्द्र आर्य ने कहा कि आर्यवीर दल के माध्यम से ही विश्व को आर्य बनाया जा सकता है। विद्यालय के डीपीई श्री जगदीश चहल ने कहा कि आर्यवीर दल की शाखाओं में आने से बच्चों में अनुशासन की भावना आती है। विद्यालय के पीटीआई श्री सन्दीप आर्य ने 30 नवम्बर रविवार के दिन बच्चों को उद्बोधन देते हुए कहा कि आर्यवीर दल के द्वारा बच्चों में खेलों की भावना तथा प्रतिस्पर्धा की भावना आती है।

इस शाखा के माध्यम से हम आचार्यसमाज के प्रचारक तथा अनुयायी तैयार करेंगे। यह शाखा प्रति रविवार प्रात: 10 से 12 बजे तक विद्यालय के खेल के मैदान में चलती है।

—आचार्य राजकुमार शर्मा, वैदिक प्रवक्ता, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत

बृहद् यज्ञ व वेदोपदेश

दिनांक 1 व 2 दिसम्बर 2014 को न्यू पालम विहार गुड़गाँव में बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में अनेक युवाओं ने जनेऊ धारण किये। आचार्य जी ने अध्यात्म के अनेक लाभों का वर्णन करते हुए सिद्ध किया कि बिना आध्यात्म के आत्मिक शान्ति दुर्लभ है। श्री ए.के. यादव जी द्वारा सुन्दर व्यवस्था की गई। इसी प्रकार 3 दिसम्बर को पालिटेकनिक झज्जर में बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी ने युवा इंजीनियरों में ब्रह्मचर्य की यशदायिनी छवि की व्याख्या की। अनेक युवा छात्र तथा छात्राओं ने जनेऊ धारण कर नित्य योग साधना व यज्ञ करने का संकल्प लिया।

किस रज से बनते कर्मवीर

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

कर्मवीर वे हैं तो अपना भाग्य स्वयं बनाते हैं। जो दिन-रात परिश्रम करते हैं और चुनौतियों का सामना करते हुए एक दिन मंजिल प्राप्त कर लेते हैं। एम.डी.एच. मसाला कम्पनी के संस्थापक महाशय धर्मपाल गुलाटी का नाम आज विश्व में चर्चित है। आज उनका कारोबार 900 करोड़ रुपये से भी अधिक है। 1947 ई० में देश का विभाजन हुआ। तब वह केवल 1500 रु० लेकर पाकिस्तान से भारत में आये। लेकिन अपनी मेहनत से उन्होंने सब चुनौतियों का सामना किया। यहाँ तक कि दिल्ली कुतुब रोड पर तांगा चलाया। स्वप्न में भी कभी यह ख्याल नहीं आया कि एक दिन वह विश्व में एम.डी.एच. मसालों के कारण लोकप्रिय होंगे। आज उनकी कम्पनी के मसालों का अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, जापान आदि अनेक देशों में नियति होता है।

महाशय धर्मपाल देश के बंटवारे के बाद सियालकोट (पाकिस्तान) से दिल्ली आए। बड़ी कठिनाई के दिन थे। दिल्ली के करोलबाग क्षेत्र में वह एक कच्चे मकान में वह अपने माता-पिता के साथ रहने लगे। एक दिन वह अपने पिता के साथ एक मसाले की दुकान में गए। यहाँ ही उन्होंने निश्चय किया कि वह भी मसाला बनाने का व्यवसाय करेंगे। प्रारम्भ में बहुत छोटे स्तर पर काम प्रारम्भ किया। लेकिन कठोर परिश्रम, लगन, ईमानदारी और मुंह में मिठास के कारण काम तेजी से बढ़ने लगा। कई वर्षों तक उन्होंने स्वयं दुकान-दुकान जाकर मसाला बेचा-फिर धीरे-धीरे मसालों की शुद्धता और गुणवत्ता के कारण काम व्यापक स्तर पर होने लगा।

महाशय धर्मपाल गुलाटी आज 90 वर्ष की आयु के हैं लेकिन उनमें युवकों के समान उत्साह है। प्रात: 4.30 से लेकर रात्रि 10.30 तक उनकी व्यस्त दिनचर्या है। वह पक्के आर्यसमाजी हैं। नित्यप्रति घर में हवन यज्ञ करना उनका दैनिक संस्कार है। आर्य केन्द्रीय

शेष पृष्ठ 6 पर....

वैदिक ध्यान योग शिविर

आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में वैदिक ध्यान योग एवं शंका-समाधान शिविर का अन्तिम दिन था जिसमें आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी बिजनौर ने मन के बारे में गूढ़ ज्ञान साधारण सरल ढंग से समझाकर मन में बिठाया। इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर सिरसा के संरक्षक चौ० जगदीश सींवर शेखूपुरिया ने कहा कि समय-समय पर आर्यसमाज ऐसे शिविरों के माध्यम से समाज में वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार करेगा। पाखण्ड को खत्म करना और वैदिक ज्ञान को बढ़ाना ही हमारा लक्ष्य है। आगामी कार्यक्रम स्कूलों में और गाँव-गाँव में लगातार एक सप्ताह का रखेंगे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि दिवाकर मित्तल और विशिष्ट अतिथि एडवोकेट किरण कम्बोज को आर्यसमाज की तरफ से जगदीश सींवर ने स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। समापन पर सभी का धन्यवाद किया।

मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि ने ऐसे शिविरों को राष्ट्र के लिए उपयोगी बताया। इस अवसर पर भूपसिंह गहलौत, जगदीश बराच, कुलदीप आर्य, रामदेव शास्त्री, प्रिं० उमेदसिंह ढाका, ओमप्रकाश आर्य, रामदेव, तजेन्द्रपाल आर्य, राजकुमार बंसल, सुधाकर शर्मा, संजीव सैनी, वेदप्रकाश सरदाना, रामू, बहिन इन्द्रावती, नीतू आर्या, आचार्य परमजीत शास्त्री आदि प्रमुख आर्यजन उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

आर्यों की अवनति के कारण

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय संस्कृति रक्षा दल 09729136764

आश्रम व्यवस्था का खंडित होना, धर्माचार्यों की अयोग्यता, गृहस्थियों द्वारा सन्तान को मोहवश गुरुकुलों में न भेजना, विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा आश्रमों की क्षति, सूफियों द्वारा आश्रम व मन्दिरों पर कब्जा करके उन्हें मदरसों व मस्जिदों के रूप में बदलना, अंग्रेजों द्वारा स्कूल की व्यवस्था खंडित हो गई। आश्रम व्यवस्था का खंडित हो जाना भी आर्यों के पतन का मुख्य कारण रहा है।

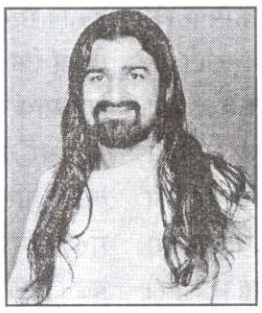

प्राचीन आर्यों ने आश्रम व्यवस्था में अत्यन्त सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक दृष्टि का विनियोग किया था। इस व्यवस्था से समाज में पवित्र और महान् भावनाओं का जन्म होता था। कलह, द्वेष आदि की निवृत्ति होती थी। समाज में सुख, सन्तोष और शान्ति की अभिवृद्धि होती थी, यह आश्रम व्यवस्था इस प्रकार की नीति पर आधारित थी कि सबकी आजीविका का साधन और लोक की सुस्थिति बनी रहे एवं धर्म, अर्थ, काम का मूल होने से मोक्ष की प्राप्ति हो।

आश्रम में आयु जीवन के उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं उसकी आवश्यकता तथा सामर्थ्य के परिप्रेक्ष्य में जीवन को चार आश्रमों में बांटा जाता था पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता था। इसमें विद्या उपार्जन करने वाले विद्यार्थियों की व्यवस्था होती थी। इस आश्रम में अनुभवी वानप्रस्थी वैज्ञानिकों की तरह जंगलों में निरोग जलवायु के द्वारा अपने ब्रह्मचारियों की शिक्षा का प्रबंध करते थे। अपनी-अपनी रुचि के अनुसार विद्यार्थी को अध्यापक मिल जाता था।

शिल्पादि जो जिस प्रकार की विद्या सीखना चाहते थे उनके लिए उसी प्रकार की व्यवस्था की जाती थी और राष्ट्र उन वानप्रस्थी आचार्यों को सब सुविधाएं तथा साधन जुटा देता था, ताकि विद्यार्थियों का कोई बोझ आचार्यों पर न पड़ सके। राजा और रंक सभी की सन्तान एक समान व्यवस्था में रहकर शिक्षा पाती थी। इसी आश्रम में उपनयन, वेदारम्भ तथा समावर्तन संस्कान होते थे। बालक गुरुचरणों में बैठकर विद्योपार्जन करके लोक प्रतिष्ठा प्राप्त करता था। लड़के व लड़कियों को विद्वान् व विदुषी बनाने के उद्देश्य से राज्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। विवाह से पूर्व लड़कियां भी लड़कों की तरह विद्या प्राप्त करती थी परन्तु सहशिक्षा न थी।

ब्रह्मचर्याश्रम में अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। तब उसके सामने सादा जीवन और ज्ञानप्राप्ति का आदर्श रहता था। इस कारण वे संयमित ढंग से धनोपार्जन करते हुए 50 वर्ष तक सुखपूर्वक बिताते थे। गृहस्थाश्रम का महत्त्व सर्वाधिक माना जाता था क्योंकि अन्य तीन आश्रम इसी पर आश्रित थे। गृहस्थी अतिथि यज्ञ को अपना धर्म समझते थे। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी इन तीन आश्रमों में से कोई भी अतिथि आये तो वह गृहस्थी के द्वार से निराश व भूखा न जाता था। जीवन में ऐसे समय प्राय: आ जाते हैं जब मनुष्य के पास खाने के लिए कुछ नहीं रहता। व्यापार मन्दा हो जाता है, पैसा चोरी चला जाता है। भौतिक आपदाओं के कारण घर-बार सब कुछ नष्ट हो जाता है। तब ऐसे समय में भी गृहस्थी समझते थे कि यदि अतिथि को खिलाए बिना स्वयं खा लिया तो गृहस्थ धर्म नष्ट हो जायेगा। अत: गृहस्थी समझकर पहले उसे भोजन कराते थे, बाद में स्वयं। भौतिक आपदाओं के समय अतिथि यज्ञ उनके लिए रामबाण औषधि थी। उस काल में लोग अपरिग्रह के उपासक थे। वे दान लेना बुरा समझते थे और भीख मांगना उनके लिए मर जाने के बराबर था। वह आत्म-निर्भरता और आत्म-सम्मान का समय था। पितृऋण, देवऋण, ऋषिऋण चुकाना धार्मिक कर्मकाण्ड का भाग था। इसलिए अतिथि यज्ञ को कोई एहसान के दायरे में नहीं रखता था।

जीवन के पचास वर्ष पूरे हो जाने के बाद व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में कदम रखता था, तब दूसरे नवयुवकों को धनोपार्जन का अवसर मिल जाता था। आज 60-70 वर्ष की आयु पाकर भी लोग धनोपार्जन में जुटे रहते हैं, सभा-सोसायटी के पद नहीं छोड़ते और वृद्धावस्था में भी बच्चे पैदा किये जाते हैं, तो बेचारे नवयुवक किस गड्ढे जाकर गिरेंगे। उन्हें भी तो रोजगार चाहिये। वानप्रस्थी सब प्रकार के ग्राम्य योज्य पदार्थ तथा अन्य सब वस्तुओं का परित्याग करके स्त्री को पुत्रों के पास छोड़कर अथवा साथ लेकर वन में चला जाता था। रमणीय वन में वानप्रस्थ आश्रम बनाता था। वहाँ विद्यार्थियों को पढ़ाता था, समाज के बच्चों को अपना बच्चा मानता था। राम, भरत, लवकुश, कौरव-पांडव, कृष्ण-सुदामा आदि वानप्रस्थियों के आश्रम में ही पढ़े थे। वानप्रस्थी शाक, कंद-मूल, फल-फूल आदि को भोजन के रूप में ग्रहण करते थे और पंचमहायज्ञों का निर्वाह करते हुए अतिथि सेवा आदि भी करते थे। एकलव्य का अंगूठा दान गुरुशिष्य परम्परा के पतन की शुरुआत थी।

जब 25 वर्ष तक वानप्रस्थी विद्यार्थियों को सुशिक्षा देकर समाजसेवा कर लेता था। जीवन की समस्याओं पर गंभीरता पूर्वक विचार कर तपमय जीवन जीता हुआ ज्ञान विषय मं खूब मंज जाता था। तब वृद्धा गृहिणी को आश्रम में छोड़कर संन्यासी बन जाता था। वेदों में भी 'यतया विजानत' इत्यादि पदों में संन्यास का विधान है। कुछ लोग पूर्ण वैराग्य होने पर वानप्रस्थ या गृहस्थाश्रम से पूर्व ही संन्यास ग्रहण कर लेते थे। संन्यासी ग्रामों, कस्बों और नगरों में घूमकर सामाजिक तथा राष्ट्रधर्म का उपदेश देता था। लोगों को अपने अनुभव बताता था। उनकी शंकाओं का समाधान करता था। आपसी झगड़ों को निपटाना और सामाजिक मर्यादा सिखलाना और धर्म का प्रचार करना संन्यासियों का मुख्य कर्म था। इससे भी बढ़कर जो ज्ञान, अनुभव उन्हें मिला था उसमें दूसरे संन्यासियों का अनुभव मिलाकर भी वे अपने को पूर्ण ज्ञानी नहीं समझते थे। इसलिए ज्ञान की खोज में निरन्तर लगे रहते थे। अत्यन्त विनीत भाव से सब संन्यासी वर्षाऋतु में इकट्ठे होकर विचार-विनिमय करते थे। कठिन प्रश्नों का प्रेमपूर्वक शास्त्रार्थ द्वारा हल निकालकर जनता को उन्नति का मार्ग दिखलाते थे।

वैदिक काल में संन्यासी केवल पृथ्वी पर दृष्टि रखते थे। जल वस्त्र से छानकर पीते थे और निरन्तर सत्य ही बोलते थे। जब कहीं उपदेश या संवादादि में कोई संन्यासी पर क्रोध करता था तब संन्यासी क्रोध न करके सदा उसके कल्याण की कामना व उपदेश करते थे। संन्यासी मुख से बुरा न बोलते थे। नासिका से दुर्गन्ध न सूंघते थे। आंखों से बुरा न देखते थे और कानों से बुरा न सुनते थे।

प्राचीन काल में संन्यासी लोक, प्रतिष्ठा, धन उपयोग व पुत्र मोह आदि सबका त्याग करके जनकल्याण व मोक्ष साधनों में ही तत्पर रहते थे। परन्तु कालान्तर में आश्रम व्यवस्था का पतन हो जाने के कारण संन्यासी पुत्रैष्णा तो क्या शिष्यैष्णा, वित्तैष्णा तो क्या बैंक खातैष्णा तथा लोकैष्णा ही नहीं सीधा मठैष्णा के अधिपति बन जाना ही संन्यासी के लिए मुख्य कर्म हो गया। ऐसे संन्यासी को आदर्श संन्यासी नहीं कहा जा सकता। संन्यासी के लिए किसी भी मठ, मन्दिर, आश्रम या कुटिया बनाने का आर्ष साहित्य में निषेध है। आदि शंकराचार्य ने आदि से लेकर अन्त तक विशाल भारत में अनवरत पैदल घूमते हुए भारत में क्रान्ति पैदा कर दी थी। उन्होंने संन्यास मर्यादाओं का पालन करते हुए कभी भी एक स्थान पर स्थायी रूप से निवास न करते हुए सतत देशाटन किया। उनके द्वारा स्थापित आज के शंकराचार्य अपने-अपने मठ में स्थायी रूप से क्यों रहते हैं? इन्हें निरन्तर राष्ट्र में भ्रमण करते हुए धर्म-संस्कृति का प्रचार करते रहना चाहिए। शास्त्रों का गहन अध्ययन कर शास्त्रार्थों के अभारतीय मत-मतान्तरों को पराजित करना चाहिए। यदि भारत में वर्ण-व्यवस्था पुन: चालू हो जाए तो भारतीय संस्कृति पुन: जीवन्त हो उठेगी। भारत पुन: विश्वगुरु बनने के पथ पर अग्रसर हो जाएगा तो आइए मिलकर संकल्प ले और भारत को फिर से समृद्ध भारत बनाए।

किस रज से बनते कर्मवीर..... पृष्ठ 5 का शेष....

सभा के अध्यक्ष होने के नाते उन्हें अनेक सामाजिक कार्य करने होते हैं। केवल आर्यसमाज ही नहीं बल्कि अनेक सामाजिक संस्थाओं के आप मार्गदर्शक हैं। हम सबने महाशय जी को दूरदर्शन तथा समाचार-पत्रों में एम.डी.एच. कम्पनी के विज्ञापनों में अवश्य देखा होगा। सफेद कपड़े, लाल पगड़ी और मोती की माला उनके व्यक्तित्व के हिस्से हैं। गुलाटी जी का जीवन मिसाल है उन सभी के लिए जीवन में नई इबादत लिखना चाहते हैं। महाशय धर्मपाल गुलाटी आज हमारे प्रेरणास्रोत हैं। उन्हीं के समान देश की मोबाइल सेवा देने वाली सबसे बड़ी कम्पनी भारती एयरटेल के प्रमुख सुनील भारती मित्तल कहते हैं कि जब तक हम बड़े स्वप्न नहीं देखेंगे। तब तक हम लम्बी छलांग नहीं लगा सकेंगे। पहले सुनील भारती ने लुधियाना में हीरो साइकिल कम्पनी में काम किया धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए। आज एयरटेल मोबाइल कम्पनी विश्व में विख्यात है। उन्होंने नई युवापीढ़ी को यह सन्देश दिया है—जो आप जिन्दगी में करना चाहते हैं, वही करिये। डॉक्टर बनना है तो डॉक्टर बनकर दिखाइये। सफलता का मूल मंत्र है—कठोर परिश्रम एवं दृढ़ विश्वास। कवि के शब्दों में—

हम अनुगामी उन पांवों के,
आदर्श लिये जो खड़े रहे।
बाधाएं जिन्हें डिगा न सकी,
संघर्षों में ही अड़े रहे।
सर पर मंडराता काल रहे,
करवट लेता भूचाल रहे।
बढ़ना ही अपना काम है,
बढ़ना ही अपना काम है।

thearyasamaj.org

मैं और मेरा परमात्मा

❑ मनमोहन कुमार आर्य

एक शाश्वत प्रश्न है कि मैं कौन हूं। माता पिता जन्म के बाद से अपने शिशु को उसकी बौद्धिक क्षमता के अनुसार ज्ञान कराना आरम्भ कर देते हैं। जन्म के कुछ समय बाद से आरम्भ होकर ज्ञान प्राप्ति का यह क्रम विद्यालय, महाविद्यालय आदि से होकर चलता रहता है और इसके बाद भी नाना प्रकार की पुस्तकें, धर्मोपदेश, व्याख्यान, पुस्तकों का अध्ययन व स्वाध्याय तथा भिन्न प्रकार की साधनाओं आदि से ज्ञान में वृद्धि होती रहती है। सब कुछ अध्ययन कर लेने के बाद भी यदि किसी शिक्षित बन्धु से पूछा जाये कि कृपया बतायें कि आप कौन हैं या मैं कौन हूं, क्या हूं, कहां से माता के गर्भ में आया, फिर मेरा जन्म हो गया, युवा व वृद्ध होने के बाद किसी दिन मेरी मृत्यु हो जायेगी। मृत्यु के बाद मेरा अस्तित्व रहेगा या नहीं। यदि नहीं रहेगा तो क्यों नहीं रहेगा और यदि रहेगा तो कहां व किस प्रकार का होगा, आदि प्रश्नों का समाधान कर दें, तो हम समझते हैं कि आजकल की शिक्षा में दीक्षित किसी व्यक्ति के लिए इन साधारण प्रश्नों का समाधान कारक उत्तर देना सरल कार्य नहीं होगा। इससे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि आजकल की शिक्षा अधूरी व अपूर्ण हैं। इसी कारण से लोग आध्यात्मिक जीवन का त्याग कर भौतिक जीवन शैली को अपनाने को विवश हुए हैं। इसके लिए हम तो यहां तक कहेंगे कि हमारे सभी धर्माचार्य इस बात के दोषी हैं कि उन्होंने देश विदेश में आत्मा सम्बन्धी सत्य ज्ञान को स्वयं भी प्राप्त नहीं किया और फिर प्रचार की बात तो बाद की है। जो लोग इस बात का दावा करते हैं कि वह इन प्रश्नों के उत्तर जानते हैं तो फिर वह इनका प्रचार क्यों नहीं करते, क्यों वह भौतिक व आडम्बर पूर्ण जीवन में व्यस्त व तल्लीन हैं, तो इसका उत्तर नहीं मिलता। वह ज्ञान किस काम का जिसका धारक व्यक्ति उसे अन्य किसी न तो दे और न प्रचार करें। विद्या तो दान देने से बढ़ती है और यदि उसे अपने तक सीमित कर दिया जाये तो व्यवहार में न होने के कारण वह स्वयं भी भूल सकता है और उसके बाद तो उसका विलुप्त होना अवश्यम्भावी है।

मनमोहन कुमार आर्य

इन सभी प्रश्नों के उत्तर पहले वेद एवं वैदिक साहित्य के आधार पर जान लेते हैं। पहला प्रश्न कि मैं कौन और क्या हूं, इसका उत्तर है कि मैं एक जीवात्मा हूं जो अजन्मा, चेतन तत्व, सूक्ष्म, नित्य, अमर व अविनाशी, एकदेशी, कर्मानुसार जन्म व मृत्यु के चक्र में फंसा हुआ, ईश्वर साक्षात्कार कर मुक्ति को प्राप्त होने वाला व मुक्ति की अवधि समाप्त होने पर पूर्व जन्म के अवशिष्ट कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म धारण करने वाला है। मेरी यह सत्ता ईश्वर व मूल प्रकृति से सर्वथा भिन्न व स्वतन्त्र है। माता के गर्भ में आने में ईश्वर की प्रेरणा काम करती है। ईश्वर की प्रेरणा से पहले जीवात्मा जो पूर्व जन्म की किसी योनि में मृत्यु को प्राप्त कर अपने कर्मानुसार नये जन्म की प्रतीक्षा में है, पिता के शरीर में आता है। सन्तानोत्पत्ति से पूर्व गर्भाधान के अवसर पर यह पिता के शरीर से माता के शरीर में आता है। माता के शरीर या गर्भ में प्रसव की अवधि तक रहकर यह पुत्र या पुत्री के रूप में जन्म लेता है।

शास्त्र यह भी बताते हैं कि जब हमारी मृत्यु होती है, उस समय यदि हमारे पुण्य कर्म पाप कर्मों के बराबर या अधिक होते हैं तो मनुष्य जन्म और यदि पुण्य कर्म कम होते हैं तो फिर पशु, पक्षी व अन्य निम्न योनियों में ईश्वर के द्वारा जन्म मिलता है। इस प्रकार से माता के गर्भ में आने के रहस्य का समाधान हमारे ऋषियों ने शास्त्रों में किया है जो पूर्णतः तर्क व युक्तिसंगत है। हमारी जब भी मृत्यु होगी तो हमारे अजन्मा व अमर होने के कारण हमारा अस्तित्व समाप्त नहीं होगा अपितु हम शरीर से निकलकर इस वायुमण्डल व आकाश में एक जीव के रूप में सर्वव्यापक परमात्मा के साथ रहेगें। यह निवास हमें ईश्वर द्वारा पुनः जन्म देने के लिए हमारी भावी माता के गर्भ में भेजने के समय तक रहेगा। यहां यह प्रश्न भी किया जा सकता है कि यदि ऐसा है तो फिर हमें व अन्यों को पूर्व जन्म की बातें याद क्यों नहीं रहतीं। इसका उत्तर है कि हमारा जो मनुष्य जीवन है उसमें हम एक समय में एक ही बात को स्मरण रख सकते हैं। क्योंकि हम वर्तमान में इस जन्म की बातों व स्मृतियों से भरे हुए रहते हैं, इस कारण पूर्व जन्म की बातें स्मरण नहीं आतीं। दूसरा कारण है कि मृत्यु के बाद हमारा पुराना शरीर व उसमें हमारा जो मन, बुद्धि व चित्त था वह इस जन्म में बदल जाता है और उस जन्म से इस जन्म में बोलना सीखने की लम्बी अवधि में हम पुरानी बातों को भूल जाते हैं। यदि विचार करें तो हमें आज की ही बातें याद नहीं रहती। हम जो बोलते हैं, यदि कुछ मिनट वा एक घंटे बाद उसे पूरा का पूरा दोहराना हो तो हम पूर्णतः वही शब्द और वही वाक्य दोहरा नहीं सकते हैं। इसका कारण जो शब्द हम बोलते हैं, उसका क्रम साथ-साथ भूलते जाते हैं। हमने प्रातः क्या भोजन किया, दिन में क्या किया, किन-किन से मिले, क्या बातें कीं, क्या पढ़ा, यदि कुछ लिखा तो क्या लिखा, उसे पूरा का पूरा, वैसा का वैसा, क्रमशः नहीं दोहरा सकते। रुक-रुक कर याद करते हैं फिर भी बहुत-सी बातें व उनका क्रम भूल जाते हैं। पूर्व दिनों व उससे पहले की घटनाओं को याद करने की बात ही कुछ और है। जब हमें अपने पूर्व के एक सप्ताह के व्यवहार का पूरा ज्ञान व स्मृति नहीं होती तो यदि पूर्व जन्म की स्मृति भी न रहे तो यह कौन से आश्चर्य की बात है। यह साध्य कोटि में है, असम्भव नहीं। अतः पूर्व जन्म के बारे में यह युक्ति कि हमें पूर्व जन्म की बातें याद क्यों नहीं होती, कोई अधिक बलवान तर्क नहीं हैं। अतः इस चिन्तन से हमें अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया जो कि वेद शास्त्र सम्मत, बुद्धि, युक्ति आदि से प्रमाणित है।

अब हम अपने परमात्मा को भी जानने का प्रयास करते हैं। हम सभी अपने चारों ओर माता-पिता, कुटुम्बी, मित्रों और सामाजिक बन्धुओं को देखते हैं। इसके साथ हम पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमा, जल, वायु, अग्नि आदि भिन्न प्रकार के तत्वों को भी देखते हैं। इन्हें देखकर विचार आता है कि सूर्य, चन्द्र व पृथिवी आदि व मनुष्य, पशु व पक्षी, वनस्पति, नदी, जल, वायु, अग्नि आदि को किसने बनाया है? मनुष्य व अन्य किसी योनि के प्राणियों ने तो बनाया नहीं? किस सत्ता के द्वारा यह बनाये गये हैं, इसका विचार कर निर्णय करना आवश्यक होता है। इसका उत्तर है कि जिस सत्ता ने हमें बनाया है, उसी ने वृक्ष आदि वनस्पतियों व इस सारे जगत एवं इसके सूर्य, पृथिवी, चन्द्र आदि ग्रह-उपग्रहादि सहित उन सभी सांसारिक पदार्थों को भी बनाया है जो कि कोई मनुष्य नहीं बना सकता। ऐसे पदार्थ जो संसार में हैं परन्तु मनुष्यों द्वारा नहीं बनाये जा सकते हैं वह अपौरुषेय रचनायें कहे जाते हैं। इनकी रचना या उत्पत्ति ईश्वर व परम-पुरुष परमात्मा से होती है। अत यहां पुनः वही प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि उसने बनाये हैं तो वह दिखाई क्यों नहीं देता। उसका उत्तर भी यही है कि सर्वातिसूक्ष्म होने से वह दिखाई नहीं देता। आंखों से केवल स्थूल पदार्थ ही दिखाई देते हैं, सूक्ष्म व परमसूक्ष्म पदार्थ नहीं। वायु और इसमें विद्यमान अणु-परमाणु किसी को कहां दिखाई देते हैं फिर भी इनका अस्तित्व है और सभी इसको स्वीकार करते हैं। त्वचा से स्पर्श होने पर वायु की अनुभूति होती है।

क्रमशः अगले अंक में....

आर्य वीर चिन्तन शिविर का आयोजन

आर्य वीर दल हरियाणा की ओर से आर्य वीर चिन्तन शिविर 3-4 जनवरी 2015 शनिवार, रविवार को वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक ने दल के कार्यों को आगे बढ़ाने के विचार विमर्श हेतु आयोजन किया गया है। चिन्तन शिविर में प्रत्येक मण्डल से अधिकारी तथा प्रमुख कार्यकर्त्ता भाग लेंगे। शिविर में प्रधान सेनापति स्वामी डॉ० देवव्रत आचार्य जी का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

प्रमुख विचारणीय विषय

वर्तमान परिस्थितियां/परिप्रेक्ष्य में आर्यवीर दल की प्रगति तथा आर्य वीर दल के कार्यों/संगठन का विस्तार।

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा

स्वामी श्रद्धानन्द का 88वाँ बलिदान समारोह

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव तथा आर्यसमाज शिवाजी नगर गुड़गाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में **अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का 88वाँ बलिदान समारोह 19, 20, 21 दिसम्बर 2014** को बड़े समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम इस प्रकार है—**भाषण प्रतियोगिता**-16 दिसम्बर प्रातः 10 बजे आर्य विद्या मन्दिर सैक्टर-7, गुड़गाँव, **भजन सन्ध्या**-19 दिसम्बर सायं 5 बजे से 8 बजे आर्यसमाज मन्दिर शिवाजी नगर, गुड़गाँव, **विशाल शोभायात्रा एवं समारोह**-20 दिसम्बर प्रातः 9.30 बजे से 3 बजे आर्यसमाज शिवाजी नगर से विभिन्न स्थलों से चलकर भीमनगर आर्यसमाज में सम्पन्न, **श्रद्धाञ्जलि सभा**-21 दिसम्बर प्रातः 9.30 बजे से 1.30 बजे तक आर्यसमाज शिवाजी नगर के निकट विशाल मैदान में आयोजित किया जाएगा। धर्मप्रेमी सज्जनों अवश्य लाभ उठायें।

—कन्हैयालाल आर्य, प्रेस सचिव

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य चर्चा—

सूक्ष्म प्राणियों द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग

गतांक से आगे....

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

सब में लक्षण प्राय: समान होते हैं जो नीचे लिखे जाते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रकार के उदरावेष्टा होते हैं।

लक्षण-उदरावेष्टा से विशेष लक्षण उत्पन्न नहीं होते हैं जिनसे उनका ज्ञान हो सके। कभी-कभी गुदा व नासा पर कण्डु, उदरशूल और अतिसारादि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और वेग के रूप में समय-समय पर प्रादुर्भूत होते और शान्त होते रहते हैं। कभी-कभी ऐसे रोगियों में अत्यधिक क्षुधा, मस्तिष्क विकार तथा मानसिक अवसाद, कम्पन, उत्क्षेपणादि लक्षण उपस्थित हो जाते हैं। जब किसी रोगी में उपर्युक्त लक्षण अकारण उपस्थित हों तो उसके मल और रक्त की अणु-वैक्षणिक परीक्षा करानी चाहिये। मल में अणुवीक्षण यन्त्र द्वारा इनके अण्डे देखे जा सकते हैं। कभी-कभी मल में अणुवीक्षण यन्त्र द्वारा इनके बहुत से संयुक्त पर्व लम्बे-लम्बे टुकड़ों के रूप में बाहर आते हैं। रक्त परीक्षा करने से अम्लरंगेच्छु श्वेताणु बहुत बढ़े हुए 14-20% मिलते हैं।

इन रोगों में साधारण रक्तन्यूनता होती है विशेष नहीं। टीनिया लेटा में औरों की अपेक्षा रक्त न्यूनता अधिक होती है और मनुष्य दुष्ट बिलोहितता से पीड़ित प्रतीत होता है। इनका निदान केवल मल-परीक्षा द्वारा ही होता है।

(4) टीनिया एकिनोकाकस

वैसे तो यह भी उदरावेष्टा की ही जाति का है परन्तु यह उनसे बहुत छोटा होता है। इसमें एक शिर और तीन पर्व होते हैं। अन्त का पर्व शेष सारे शरीर के बराबर होता है। शिर लम्बा और उसमें चार चूषक होते हैं जिनके इतस्तत: 30-40 बडिश आकार प्रवर्धनों की दो रेखायें होती हैं। इसके अण्डे बहुत छोटे होते हैं और उनमें से कृमि उत्पन्न होते हैं जिनके बडिश आकार प्रवर्धन होते हैं।

जीवन यात्रा-वास्तव में यह शृगाल तथा श्वानादि के अन्त्र में रहता है और वहीं से इसके अण्डे मल द्वारा बाहर निकलते रहते हैं, ऐसे मल से दूषित पेयजल किसी मनुष्य के अन्त्र में जाता है तो अण्डा अन्दर जाकर फट जाता है और 6 बडिश आकार प्रवर्धनों वाले कृमि उत्पन्न हो जाते हैं। ये कृमि अन्त्र की दीवार को लांघकर रक्त में प्रविष्ट हो जाते हैं और रक्त द्वारा किसी अंग में पहुँचकर वहीं स्थिर हो जाते हैं। तब वहाँ इनके इतस्तत: एक कोष्ठ सा बन जाता है जिनको आंग्ल भाषा में हाइडेटिड सिस्ट कहते हैं।

हाइडेटिंग सिस्ट के तीन भाग होते हैं—

(1) सबसे ऊपर सौत्रिक जन्तु से निर्मित आवरण-सा होता है। यह आवरण सिस्ट का भाग नहीं होता प्रत्युत इस अंग का ही भाग होता है जिनमें सिस्ट रहती है। इसलिये इसे मिथ्या आवरण कहते हैं। सिष्ट के दो ही आवरण होते हैं।

(2) **बाह्यावरण**-स्वच्छ, मोटा, श्वेत रंग का, श्लक्षण और तहदार आवरण होता है।

(3) **अंतस्थ आवरण**-बाह्यावरण के अन्दर होता है। यह अस्वच्छ, मोटा, खर और श्वेत धब्बेदार होता है। इस कोष में जलवत् तरल भरा रहता है। इसमें लवण होते हैं, परन्तु एलब्यूमिन नहीं। अन्तस्थावरण से कई और छोटे-छोटे कोष अन्दर की ओर उत्पन्न हो जाते हैं। इन कोषों में उपयुक्त वास्तविक शिर निकल आते हैं। सिस्ट मनुष्य के शरीर से बाहर निकलकर कुत्तों, गीदड़ों के अन्त्र में जाते और उनसे कीट उत्पन्न हो जाते हैं।

वस्तुत: यह कृमि कुत्ते आदि की आंत में रहता है। कभी-कभी वृक्क, फुफ्फुस, मस्तिष्क तथा मांस में भी पैदा हो जाता है। जब तक कोष बड़ा नहीं हो जाता इसके लक्षण उत्पन्न नहीं होते। कभी-कभी तो इसका ज्ञान आजीवन नहीं होता। इसके बढ़ने से यकृत् बढ़ा हुआ और कुछ बोझल-सा प्रतीत होता है। यह कोष शनै:-शनै: बढ़ता है। जब बहुत बढ़ जाता है तो समीपवर्ती अंगों पर दबाव डालता है जिससे लक्षण उत्पन्न होते हैं। जब वक्षोदर-मध्यस्थ मांसपेशी पर दबाव पड़ता है तो श्वास होता है, पित्त प्रणाली पर पड़ता है तो कामला और शिराओं पर पड़ता है तो आर्द्रशोथादि लक्षण हो जाते हैं। जब कोष बहुत बढ़ जाये तो उदर के बाहर से ही उसे टटोल सकते हैं और मशकबत गति प्रतीत की जा सकती है। इससे जलोदरादि रोगों का सन्देह हो जाता है। साधारणतया यह कोष नहीं फटता परन्तु जब कभी फट जाये तो जहाँ फटेगा स्थानानुसार लक्षण उत्पन्न कर देगा तथा पित्तप्रणाली में फटने से पित्त प्रणालियों में दाह उत्पन्न करके तीव्र कामला उत्पन्न कर देता है।

जब बाहर की ओर उदरकला आमाशय और वक्षोदर मध्यस्थ मांसपेशी को खाकर फुफ्फुसावरण में फट जाये तब फुफ्फुसावरण प्रदाह के विशेष लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। अन्त्र या आमाशय में फूटने पर तरल क्षुद्र कोष्ठों सहित बाहर निकल जाताहै और शान्ति हो जाती है। उदरकला में फटने पर वहां शोथ-सा पैदा हो जाता है। विरलावस्था में जब कोष में कीट के लिए शिर मर जाये तो इसमें पीप भी पड़ सकती है।

रोग मीमांसा-जब यकृत् में किसी अर्बुद की अशंका हो तो इस रोग की ओर ध्यान दें। रक्त परीक्षा से अम्ल-रंगेच्छु बढ़े हुए प्रतीत होते हैं यह उदर कृमियों का विशेष महत्त्व है। एक्स-रे से भी रोग ज्ञान में सहायता मिलती है।

जब यकृत् के मध्य में हो तब इसका ज्ञान अति दुष्कर है। कई बार आजीवन ज्ञान नहीं होता।

रक्तस्थ कृमि फिलेरिया

पर्याय-फिलेरिया श्लीपद।

जो फिलेरिया भारतवर्ष में होता है उसे Flaria Bancrofti कहते हैं। इसके अण्डे और सद्योजात कृमि रक्त में भ्रमण करते हैं। ये कृमि कोई-कोई तीन-तीन इंच लम्बे होते हैं और कई केवल 1/10 लंबे होते हैं। जिस प्रदेश में यह रोग बहुत होता है वहाँ अनेक पुरुषों में ये कृमि उपस्थित होते हुए भी कोई रोग उत्पन्न नहीं करते हैं, दिन को लुप्त हो जाते हैं। अर्द्ध रात्रि को अधिक मात्रा में रक्त में मिलते हैं। रोग निदानार्थ आधी रात को दस बजे से प्रात: तक हर दो-दो घण्टे बाद रक्त की परीक्षा करनी चाहिए। रक्त-बिन्दु को यदि कांचपटिका पर रखकर कवर स्लिप से ढक कर अणुवीक्षण यंत्र द्वारा देखा जाये तो ये कृमि स्पष्ट दीख पड़ते हैं। जो लोग रात को जागते हैं और दिन को सोते हैं उनके रक्त में ये दिन में उपस्थित होते हैं, रात्रि को लुप्त हो जाते हैं।

परिपक्व कृमि लसीका वाहिनियों में रहते हैं, वहीं अण्डे देते हैं। ये अण्डे वहां से रक्त में आते हैं।

इस रोग का प्रसार मच्छर द्वारा ही होता है। मादा मच्छर रोगी को काटती है और उसके रक्त के साथ अनेक अण्डों को भी चूस लेती है। मच्छर के शरीर में मलेरिया के जीवाणु की भांति इसका दूसरा जीवन चक्र चलता है। दस-दस दिन इस चक्र को पूरा होने में लगते हैं। इतने काल के बाद मच्छर इस योग्य होता है कि वह रोग प्रसार कर सके इसके बाद आजीवन वह रोग फैलाने का साधन बना रहता है।

ये कृमि लसीका वाहिनियों में शोथ उत्पन्न करते हैं, इस शोथ के कारण लसीका वाहिनी का मार्ग सर्वदा के लिए बन्द हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप श्लीपद रोग अत्यन्त स्थूल हो जाता है। जिस प्रदेश में लसीका वाहिनी बंद हो जाती है वहां ही श्लीपद होता है।

बहुधा शरीर का अधोभाग-पांव, जंघा तथा अण्डकोप प्रभावित होते हैं। जब अन्त्र की लसीका वाहिनियां रुक जायें तो अन्त्र से चूसे हुए आहार रस को। अब उलटे मार्ग की ओर रास्ता बना ले तो मूत्र का वर्ण आहार रस के मिलने के कारण श्वेत हो जाता है, इसे वसामेह कहते हैं। यदि उदरक-कला की ओर रुख कर ले तो श्वेत तरलयुक्त जलोदर पैदा हो जाता है।

इन कृमियों में से कई कृमियों का विष अधिक विषैला होता है, लसीका वाहिनियों में शोथ पैदा करता है तथा समय-समय पर ज्वर पैदा करता रहता है। ये शोथ साधारण फिलेरिया के कृमियों से उत्पन्न शोथ की अपेक्षा उग्र होता है। उससे लसीका वाहिनियों का मार्ग जल्दी बन्द हो जाता है।

क्रमश: अगले अंक में....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।